डॉ. महेश प्रसाद सिन्हा
प्रधानाचार्य सह ऐसोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग, सी.एम.जे.कॉलेज दोनवारीहाट खुटौना,मधुबनी– 847227
Email ID: principalcmjcollege@gmail.com Web:www.cmjcollege.com Mob.No 8544513344

हिन्दी प्रतिष्ठा पार्ट–II के छात्रों के लिए कोर्स मैटेरियल (दिनांक–08 मई, 2020)

छायावाद और प्रगतिवाद में अन्तर

छायावाद और प्रगतिवाद के मूलभूत अंतर को समझना आवष्यक है। पहला अंतर है समय का। हिन्दी में छायावाद का समय द्विवेदी युग के बाद यानी प्रसाद, पंत, निराला और महादेवी की उन सभी कविताओं का द्योतक है, जो सन् 1918 से सन् 1936 तक लिखी गयी। यानी 'उच्छवास' से 'युगान्त' तक 18 वर्षों के समय को छायावाद का दौर माना जाता है। जबकि प्रगतिवाद का समय 'प्रगतिषील लेखक संघ' द्वारा 1936 ई0 में लखनऊ में आयोजित उस अधिवेषन के साथ होता है, जिसकी अध्यक्षता प्रेमचंद ने सज्जाद जहीर, मुल्कराज आनन्द आदि की उपस्थिति में की थी। 'तारसप्तक' के प्रकाषन सन् 1943 तक महज 6–7 वर्षों की अल्प आयु में प्रगतिवाद का अंत हो गया।

प्रकृति चित्रण छायावादी काव्यसृजन की मूल आत्मा है। प्रकृति के विषाल वैभव को रोमानी भाव से कल्पना के कैनवास में कैद किया गया है। एक तरह से कहें तो यहां प्रकृति ही सत्य, षिव और सुन्दर है। चाहे प्रसाद की पंक्ति हो–

'बीती विभावरी जाग री !
अम्बर पनघट में डूबो रही
तारा घट उषा नागरी।'

या पंत की पंक्ति–

'कहो तुम रूपसी कौन,
व्योम से उतर रही चुपचाप।'

या फिर निराला की पंक्ति हो–

''दिवसावसान का समय
मेघमय आसमान से उतर रही है
वह संध्या सुंदरी परी–सी
धीरे–धीरे–धीरे।''

चाहे महादेवी की पंक्ति हो–

''तोड़ दो यह क्षितिज, मैं भी देख लूं उस ओर क्या है ?
जा रहे जिस पंथ से युग कल्प, उसका छोर क्या है ?''

इस तरह समग्र छायावादी काव्य प्रकृतिमयी है। इसके विपरीत प्रगतिवादी काव्य की आत्मा जनमानस के षोषण व पीड़ा में बसती है। उस पीड़ा से मुक्ति के लिए कवि प्रकृति में रमने के बजाय 'हिसात्मक क्रांति' तक जाना चाहता है। बालकृष्ण षर्मा नवीन ने तो क्रांति की अपील की– ''कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ/जिससे उथल पुथल मच जाए। एक हिलोर इधर से आए, एक हिलोर उधर से आए।'' केदारनाथ अग्रवाल ने खुली घोषणा की–

मारो–मारो–मारो हंसिया
हिंसा और अहिंसा क्या है?
जीवन से बढ़ हिंसा क्या है?

''निराला की पंक्ति है– ''गुरु हथौड़ा हाथ/करती बार–बार प्रहार !'' इस तरह आप देखेंगे कि छायावादी कल्पनाषीलता और प्रकृति चित्रण की जगह ठोस यथार्थ की अभिव्यक्ति द्वारा प्रगतिवादी कवियों ने जनमानस के षोषण और उसकी पीड़ा के समाधान के लिए 'क्रांति' को एक मात्र साधन माना। इस क्रांति के लिए उसने मार्क्सवाद की अवधारणा 'द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद' और समान वितरण से जुड़े ''साम्यवाद'' की अवधारणा को ग्रहण किया। निराला ने 'बंगाल के अकाल' कविता में लिखा– ''बाप बेटा बेचता है, भूख से बेहाल होकर।/धर्म धीरज प्राण खोकर, हो रही अनरीति बर्बर।/राष्ट्र सारा देखता है।'' और

'ओ मजदूर ! ओ मजदूर !!
तू सब चीजों का कर्त्ता, तू ही सब चीजों से दूर,
ओ मजदूर! ओ मजदूर!!'

X X X

इस खलकत का खालिक तू है,
तू चाहे तो पल में कर दे,
इस दुनिया को चकनाचूर, ओ मजदूर ! ओ मजदूर !!''

छायावादी काव्य की भाषा साहित्यिक हिन्दी है। इसमें लक्षणा, व्यंजना, बिम्ब, प्रतीक, अलंकार एवं रसों का उपयोग मिलता है। जबकि प्रगतिवाद में सहज, सरल और स्वाभाविक भाषा का प्रयोग केवल अभिधा में किया गया है। छायावाद में संस्कृत के तत्सम षब्दों एवं लाक्षणिक षब्दों का प्रयोग प्रमुखता से किया गया है, जो क्लिष्ट होने के कारण जनसाधारण की समझ से परे है। जबकि प्रगतिवाद में लोक–षब्दों का प्रयोग धड़ल्ले से मिलता है, जो लोकभाषा के निकट और जनसामान्य के संप्रेषण की भाषा है। छायावादी महाकाव्य कामायनी की एक प्रारंभिक पंक्ति देखें– 'हिमगिरि के उत्तुंग षिखर पर, बैठ षिला की षीतल छांह/एक पुरुष भींगे नयनों से देख रहा था प्रलय प्रवाह..'। इसी तरह निराला की कविता 'राम की षक्ति पूजा' की एक पंक्ति है– 'है अमानिषा उगलता गगन घन अंधकार।' इसके ठीक विपरीत प्रगतिवाद में सरल, सहज, सपाट अभिव्यक्ति मिलती है। बगैर किसी लाग लपेट के नागार्जुन ने थोथी आजादी पर व्यंग्य करते हुए लिखा–'कागज की आजादी मिलती,/ले लो दो–दो आने में।' यहां अलंकार नहीं, बल्कि भावयुक्त अभिधा षब्दषक्ति है।

छायावाद या स्वच्छंदतावाद के केन्द्र में व्यक्ति है, जबकि प्रगतिवाद के केन्द्र में समाज। इसलिए स्वच्छंदतावाद या राष्ट्रवाद, गाँधीवाद, नव वेदांत और षून्यवाद के साथ अरविन्द का स्पष्ट प्रभाव छायावाद में मिलता है। जबकि प्रगतिवाद पर मार्क्सवाद का प्रभाव है। दो वर्ग– पूँजीपति वर्ग और सर्वहारा वर्ग है। मार्क्स का द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद है। हीगेल का द्वन्द्व मानसिक स्तर पर है, जबकि मार्क्स का आर्थिक स्तर पर। इसलिए यहां समाज के मजदूर–किसान या सर्वहारा और पूँजीपति वर्ग का षोषण केन्द्र में है।

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद छायावाद के केन्द्र में है। माखनलाल चतुर्वेदी, सुभद्रा कुमारी चौहान, मैथिली षरण गुप्त आदि की कविताएं मूलतः सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को प्रकाषित करती हैं, जबकि प्रगतिवाद में आर्थिक जरूरत पर बल दिया गया है और उसके लिए एक मात्र उपाय क्रांति है। छायावाद में राजनीति का प्रष्न ही नहीं है। पंत की कविता का एक चित्र है–

''राजनीति का प्रष्न नहीं रे आज,
जगत के सम्मुख एक वृहत सांस्कृतिक समस्या
जग के निकट उपस्थित।''

प्रगतिवादी कविता राजनीति से प्रेरित है। साम्यवाद को स्थापित करने के लिए 'दुनिया के मजदूरों एक हो' का स्लोगन और लाल झंडा, हथौड़ा, हँसिया आदि और रूस की साम्यवादी व्यवस्था तथा इंग्लैंड में मजदूर दल की जीत व पूरी दुनिया के मजदूरों की एकता के साथ राजनीति तथा दर्षन का प्रभाव प्रगतिवादी साहित्य में मिलता है। नरेन्द्र षर्मा की कविता का एक चित्र है–

''लाल रूस का दुष्मन साथी! दुष्मन सब इन्सानों का
दुष्मन है सब मजदूरों का, दुष्मन सभी किसानों का।''

छायावादी कविता का मुख्य तेवर कल्पनालोक पर आधारित है, प्रेम की भावना कल्पनामूलक है, चारों तरफ अंधेरा और निराषा है, जबकि प्रगतिवाद का मुख्य तेवर यथार्थपरक और आस्थावादी है, जिसके कारण यहां बेवाक, बेझिझक तेवरयुक्त कथन है। केदारनाथ अग्रवाल की कविता का एक उदाहरण प्रस्तुत है–

''तेज धार का कर्मठ पानी, चट्टानों के ऊपर चढ़कर
मार रहा है घूंसे कसकर तोड़ रहा है तट चट्टानी।''

छायावाद के काल्पनिक रोमानियत प्रेम का एक चित्र है–

''कहो तुम रूपसि कौन, व्योम से उतर रही चुपचाप।''

जबकि प्रगतिवादी यथार्थवाद से युक्त प्रेम का एक सपाट चित्र बाबा नागार्जुन ने खींचा है–

''खेत हमारे, भूमि हमारी
सारा देष हमारा है
इसलिए तो हमको इसका
चप्पा–चप्पा प्यारा है।

छायावाद के केन्द्र में दुःख के प्रति रूमानियत भरी दृष्टि है। सुख की तरह दुःख से भी लगाव दिखता है, जबकि प्रगतिवाद मे दुःख, यातना और षोषण को आक्रामक रूप में बुरा माना जाता है और इस बुराई से निजात पाने के लिए उसके खिलाफ अहिंसात्मक क्रांति ही एकमात्र समाधान है। छायावादी दुःख के प्रति रूमानियत का एक चित्र है–

ष वह तोड़ती पत्थर.....
ष्याम तन भर बँधा यौवन
अपने कर्मरत नयन
गुरु हथौड़ा हाथ करती बार–बार प्रहार।

वहीं प्रगतिवाद में दुःख से मुक्ति का परिवर्तनकारी क्रांतिकारी चित्र देखें–

''इस खलकत का खालिक तू है, तू चाहे तो पल में कर दे,
इस दुनिया को चकनाचूर, ओ मजदूर ! ओ मजदूर !!''

इस प्रकार छायावाद एक स्वच्छंद स्वान्तःसुखाय काव्यधारा है तो प्रगतिवाद जीवन के प्रति यथार्थपरक वैज्ञानिक दृष्टिकोण। जीवन में अतिषय कल्पनाषीलता, रूमानियत तथा वैयक्तिक भावना छायावाद की विषेष्ता है तो प्रगतिवाद में यथार्थवादी काव्य चेतना और सपाटबयानी। जनता की भाषा में जनता की बातें, मुक्तछंद, व्यंग्यात्मकता और क्रांति आदि प्रगतिवाद और प्रगतिषील काव्यधारा की विषेषताएं हैं। इसे समन्वित रूप में समझना चाहिए। इनका मूल उद्देष्य जनजीवन की समस्याओं तथा संघर्षरत जीवन का चित्रण था। छायावादी पलायन, निराषा, पराजय की भावनाओं के खिलाफ प्रगतिवाद एक विस्फोट था, जिसमें सर्वथा एक नवीन प्रगतिषील चेतना और वैज्ञानिक दृष्टिकोण खुलकर सामने आया।

दिनांक : 08/05/2020 **– डॉ. महेश प्रसाद सिन्हा**